ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

गागरोन का खींची राजवंश और पीपाजी

Gagron's Draghi Dynasty and Pipaji

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 23/10/2021, Date of Publication: 24/10//2021

सम्पत राज नागर
प्राचार्य,
हिंदी विभाग,
संस्कार गर्ल्स कॉलेज,
कापरेन, बून्दी,
राजस्थान, भारत

सारांश / Abstract

पीपाजी के स्थान पर हुए विराट जयन्ती समारोह ने मुझमें पीपाजी पर कुछ लिखने की इच्छा जगाई। मेरे मन की यह धारणा पक्की हो गई कि पीपाजी की कथा को भले ही सभी जानते हो परन्तु सच्ची भक्ति के अर्थ पीपाजी के लिये क्या थे? उनका आध्यात्मिक चिंतन क्या था? इसे जानने वाला वास्तव में बहुत ही कम है। बस फिर इसी कार्य को करना मेरा अभिष्ठ बन गया और इस चिंतन सामग्री के अभाव ने मेरा मन विचलित कर दिया। उनमें पीपाजी का ऐतिहासिक विवेचन और संत रूप में आध्यात्मिक चिन्तन का अभाव था। जबकि इन्हीं बिन्दुओं के साथ पीपा जी की भक्ति साधना पर लेखन करना मेरा ध्येय था।

The Virat Jayanti celebrations at Pipaji's place instilled in me a desire to write something on Pipaji. This convinced my mind that even though everyone knows the story of Pipaji, but what was the meaning of true devotion for Pipaji? What was his spiritual thought? Very few really know this. It became my ambition to do the same work again and the lack of this material of thought disturbed my mind. He lacked the historical interpretation of Pipaji and spiritual thought in the form of a saint. Whereas with these points it was my goal to write on Pipa ji's devotional practice.

मुख्य शब्दः युद्धोन्मादी, अपराजेय, विश्वबन्धुत्व, अनुप्रमाणित, अनुपमेय, पैराणिक खिराज, टकसाल।

Key words: War Fanatic, Invincible, Universal Brotherhood, Attested, Incomparable, Paranoid, Mint.

प्रस्तावना

दुर्गो का नाम आते ही हमारे मानस पटल पर खडकते खाड़ो युद्धोन्मादी और आकुल अस्त्र शस्त्रों की झंकारों का दिल दहला देने वाला दृश्य उपस्थिति हो जाता है, परन्तु इनमें वे दुर्ग अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं जहाँ युद्धों के वातावरण के मध्य अध्यात्म और शंाति का दिव्य संदेश देने वाले राजा से सन्त बने महापुरुषों ने अपनी साधना से उसकी संस्कृति का निर्माण किया हो और यह बता दिया हो कि वीरता की अभिव्यक्ति का माध्यम केवल युद्ध करना ही नहीं होता अपितु इसकी अभिव्यक्ति भक्ति के माध्यम से भी होती है जो सदैव अपराजेय रहती है।

जी हाँ। यह पक्तियाँ उसी गागरोन - दुर्ग के लिए हैं जहाँ के खींची राजपूत शासकों ने देश की स्वंतत्रता और उसे एकसूत्र में बाँधने के लिए अपने आपको बलिदान कर दिया था। इसी खीची राजवंश परम्परा में युद्ध के बाद हमंशा के लिये राज्य और तलवार का वार त्यागकर महान त्यागी संत के रुप में प्रतिष्ठित राजा प्रतापराव अर्थात् पीपाजी महाराज का नाम महान संत के रुप में लिया जाता है। पीपाजी ने यहीं पर शक्ति को भक्ति में परिवर्तित कर गागरोन दुर्ग को भक्तिकाल का महान केन्द्र बनाने में जो साधना की उसका प्रताप सदियों बाद आज भी देश-भर में प्रकाशित है और यही कारण है कि भारतीय दुर्ग परम्परा में आज गागरोन को जितना शक्ति के अभेध्य दुर्ग के रुप में जाना जाता है उतना ही एक महान भक्ति तीर्थ के रुप में भी।

मानवता विश्वबन्धुत्व, अध्यात्म की भावना तथा साधना का सन्देश विश्व भर में प्रसारित करने में भारत की भूमि सदैव आगे रही हैं इसी क्रम में गागरोन दुर्ग एक ऐसी महान आत्मा का जन्मस्थल होने का भी सौभाग्य मिला जो आजीवन ईश्वर भक्ति और विश्व मंगल की भावना से अनुप्राणित रहे, इसलिए भारतीय भक्तिकाल का इतिहास उन्हें संत शिरोमणि पीपाजी महाराज के नाम जानता है।

पीपाजी इसी गागरोन दुर्ग में जन्में यहीं उन्होंने राज्य किया, यहीं उन्होंने संग्राम लड़े झोर फिर इसी के सामने आहू और कालीसिन्ध नदी के किनारे गुफा बनाकर अपनी ईश्वर भक्ति की दिव्य-साधना से एक महान संत बनकर पश्चिमी भारत को भक्ति की गंगा में बहाने का जो

सफल प्रयास किया वह अनुपमेय ही नहीं वरन् हर युग के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण है।''

समूचे देश में एकमात्र यही गागरोन दुर्ग है जो कठोर अभेद्य और पाषाणी चट्टानों पर बगैर किसी प्रकार की नींव के सदियों से आज तक अविचल खडा हुआ है।1 इसी प्रकार मध्यकालीन भारत में इस दुर्ग का इतना अधिक महत्त्व बढ़ गया था कि ''मआसिरे महयूदशाही के प्रख्यात लेखक शिहाव हाकिम ने इसे हिन्दुस्तान के समस्त किलों के कण्ठहार का विचला मोती2 कहकर प्रशंसित किया था। गागरोन का सम्बन्ध पुरातात्त्विक निधियों से भी रहा है। जिससे इस भू-भाग की प्राचीनता का बोध हुआ है। इस क्षेत्र का सम्बन्ध पौराणिक मान्यता के क्रम में भगवान कृष्ण के गुरु जिसका यह क्षेत्र निवास (गगरिण्य) था तो यह विद्वान प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेखित है।

गागरोन के नरेश प्रतापराव (पीपाजी) के जन्म के बारे में कई विचारकांे और इतिहासकारों ने अलग अलग मत हैं। ''इसी आधार पर एवं पीपाजी क्षत्रीय दर्जी समाज जोधपुर की सर्वमान्यता के अनुसार पीपाजी का जन्म वि.स. 1380 चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को गागरोन दुर्ग में हुआ था' 3 और इसी तिथि संवत को बरसों से अधिकृत मानकर जयन्ती का उत्सव उनके गागरोन क्षेत्र में मनाया जाता है। और 1360 ई. में गागरोन दुर्ग के शासक बने'समयानुसार उनके बारह विवाह हुए जिन के नाम इस प्रकार है। 1. धीरदेवी गोथल, 2. अंतरदेवी चावड़ी 3. भगवती देवी 4. रमादेवी बाधेली 5. विजयारमण सोलंकवी 6. रभाकवंर 7. लिछमादेवी 8. विरजभानू 9. सिंगारदेवी झाली 10. कंचन देवी 11. सुशीला देवी 12. सीता सोंलकी

पीपाजी के संत जीवन की धर्म यात्राओं में इसी सीता साध्वी रानी का बड़ा भारी साथ रहा।

प्रतापराव ने गागरोन पर कई वर्ष तक शासन किया। ऐसा माना जाता है कि उनके राज्य में अनेक भक्तों, सन्तों की टोलियाँ गागरोन से गुजरती थी, जिनका स्वागत सत्कार स्वयं राजा प्रतापराव करते थे। इस से प्रतीत होता है कि उनमें भक्ति के बीज भी विद्यामान थे। बाद में निःसंतान होने एवं सन्यास लेने पर उन्होंने गागरोन का राज्य अपने भतीजे कल्याणराव को सौंप दिया था। परन्तु राज्यकाल में उनके समय में गागरोन दुर्ग पर दिल्ली के तत्कालीन सुल्तान ''फिरोजशाह तुगलक' ने आक्रमण किया था, ''जो उनके समय की महत्त्वपूर्ण घटना थी।' 4 जब से गागरोन दुर्ग का निर्माण हुआ है तब से अब तक वह अविजित रहा है और ना ही वहाँ के किसी शासक ने किसी को खिराज, अथवा जजिया कर दिया। फिरोज शाह तुगलक ने अपने दो सेना नायक के साथ गागरोन पर आक्रमण करने भेजा और स्वयं सुल्तान भी इस दुर्ग पर आक्रमण करने आया पूरे दिन गागरोन पर घमासान युद्ध हुआ परन्तु सुल्तान की सेना दुर्ग की अभेद्यता के कारण इसे विजित करने में ना कामयाब रहा। हार से दुःखी एवं विवश हो सुल्तान ने युद्ध बन्द कर दिया और वह दिल्ली चला गया।

इस प्रकार युद्धों की ऐसी विभीषिकाओं को देख अन्ततः राजा ने अपना राज्य भतीजे को सौंपा और फिर वे स्वामी रामानन्द के शिष्य बने तथा संत के रुप में इन्होंने अपार सफलता प्राप्त की।

मुगल काल में गागरोन दुर्ग का उल्लेख मालवा की सरकार के रुप में मिलता है। जहांगीर ने इसे बून्दी के रावरतन हाड़ा को जागीर में दिया। शाहजहाँ के काल में जब कोटा में हाडाओं का राज्य स्थापित हुआ तब यह दुर्ग कोटा के महाराव मुकुन्द सिंह को दिया गया। उनके काल में यहाँ अनेक देव मन्दिरों का निर्माण भी हुआ।

विगत वर्षो में इसका सुन्दर जीर्णोद्धार भी किया गया है एवं इसमें सुन्दर देव प्रतिभाएँ भी स्थापित की गई है। जालिम सिंह के समय इस दुर्ग में सिक्कों के निर्माण की एक टकसाल भी थी उसने इस दुर्ग को अनेक तोपों से भी सुसज्जित किया था।' 5 1975 ई. में यह झालावाड़ जिले में आया। इस प्रकार हम देखते है कि गागरोन के खीची राजवंश ने अपने राजनैतिक कौशल और बलिदानों से गागरोन दुर्ग के लिये जो उदाहरण प्रस्तुत किये वे आज भी देश पर आये संकटों के निवारण का सन्देष देते है।

जहाँ तक गागरोन दुर्ग के प्राकृतिक परिवंश, पर्यटन, स्थापत्य निर्माण तथा गौरव गरिमा का प्रश्न है तो यह दुर्ग आज भी न केवल हाडौती मालवा में अपितु समुचे उत्तर भारत में बेजोड़ माना जाता है। गागरोन दुर्ग की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी नैसर्गिक सुरक्षा व्यवस्था ऊँची पर्वतमालाओं की अभेद्य पाषाणी दीवारों सतत् प्रवाहमान नदियों और सधन वन ने गागरोन को ऐसा प्राकृतिक सुरक्षा कवच प्रदान किया है जो भारत के चन्द दुर्गो को ही प्राप्त होगा। मध्यकाल में मेवाड़ गुजरात मालवा और हाड़ौती के सीमावर्ती क्षेत्र पर मुख्य से स्थिति होने से गागरोन दुर्ग का सामरिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व था। तब यही एक मात्र ऐसा केन्द्र था जहाँ से सभी स्थलों की निगरानी कर नियंत्रण स्थापित हो सकता था गागरोन के दुर्ग को अपनी इस

सामरिक स्थिति के कारण कई आक्रान्ताओं के भीषण आक्रमण भी झेलने पड़े। यह दुर्ग अपने अनूठे स्थापत्य पर्यटन के कारण भी उत्कृष्ट है। दुर्ग के निर्माण में भौगोलिक स्थिति का पूरा उपयोग करते हुए इसकी बनावट पहाड़ी की बनावट के अनुरुप रखी गयी है। कि दूर से सहसा दिखाई नहीं पड़ता। अपनी बनावट की इस अदभूत विशेषता के कारण शत्रु के लिये दूर से दुर्ग की स्थिति का अनुमान करना कठिन अवश्य रहा होगा।

तीन सुदृढ़ परकोटों से सुरक्षित गागरोन दुर्ग के प्रवेश द्वारो मंे सूरजपोल, गणेशपोल, भैरव पोल और कृष्ण द्वार प्रमुख है। प्राचीन काल में दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वार पर लकड़ी का उठने वाला पुल बना था।

गागरोन दुर्ग भारत में जल दुर्ग का प्राचीन उदाहरण है यह जलदुर्ग की श्रेणी में आता है क्योंकि यह तीनों ओर से आहू तथा काली सिन्ध नदियों के जल से घिरा है। आहू तथा काली सिन्ध यहाँ विपरीत दिशाओं से बहती हुई आकार इस दुर्ग के नीचे दक्षिण में मिल जाती है। जहाँ ये दोनों नदियां मिलती है। वह स्थल समेलजी के नाम से पवित्र और पूज्यनीय माना जाता है। इसी समेलजी से एकाकार होकर यह नदियाँ दुर्ग के पूर्वी भाग के समानान्तर प्रवाहित होती हुई उत्तर की ओर बहती हुई बलिण्डा घाट से निकल कर आगे की ओर प्रवाहित हो जाती है। इस प्रकार अरावली की मुकंदरा पर्वतमाला की गोद में स्थित व उसकी उसकी परिक्रमा करती उक्त दोनों नदियों की अविरल जलधारा से घिरा गागरोन दुर्ग सुन्दर एवं मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

यह पेपर गागरोन पर लिखा गया यह पेपर गम्भीर अन्वेषण एवं अध्ययन का परिणाम है। इसके प्रकाशन के उपरान्त वे गागरोन के सुप्रसिद्ध खींची संत पीपाजी एवं व्यक्तित्व एवं कृत्रतव्य तथा उनके सामाजिक सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक अवदान परिणाम है।
इसके माध्यम से झालावाड़ अंचल के प्राचीन से लेकर अर्वाचीन तक के ऐहिहासिक पुरातत्वीय एवं धार्मिक सांस्कृतिक वैभव से परिचय कराया है।

निष्कर्ष

संत पीपाजी से जुड़े अनेक सन्दर्भो को प्रस्तुत पेपर के माध्यम से एक स्थान पर उपस्थित करने के श्रामसाध्य दायित्व का निर्वहन सुयोग्य व मनोयोग से किया है। सहज है संत से जुड़े साहित्यिक, सामाजिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक सन्दर्भ मुकताओं को पिरो कर जन मानस एवं भक्ति-पथ के पथिकों के सम्मुख ज्योतिर्मय करने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *परशुराम चतुर्वेदी - उत्तरी भारत की संत परम्परा पृ. सं. 226-27*
2. *प्रकाशन - भारती भण्डार लीडर प्रेस इलाहाबाद*
3. *नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. सं. 186*
4. *प्रकाशन - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली*
5. *ललित शर्मा - रामानन्द परम्परा के उदगायक संत पीपाजी पृ. सं. 24*
6. *प्रकाशन - श्री कावेरी शोध संस्थान उज्जैन, म.प्र.2008*
7. *"वही"..... पृ.सं. 26*
8. *ललित शर्मा - गागरोन इतिहास पुरातत्व और पर्यटन - पृ. सं. 25*
9. *प्रकाशन - श्री कावेरी शोध संस्थान उज्जैन, म.प्र. 2009*